

C. ACHYUTHA MENON

C. Achyutha Menon (1913-1991) is remembered for the brilliant development initiatives that he took as the Chief Minister of Kerala, which not only transformed the economy of the state but also stimulated a new intellectual awakening in the society.

Born into a lower middle class family, the early part of his life was spent at Thrissur, a town in Kerala known for its cultural tradition. Though the young Achyutha Menon began practising Law at Thrissur, he soon heeded the call of the National Movement. He worked for the Congress initially, but joined the Communist Party, which was more aligned to his radical thinking in 1942.

In the first Communist Ministry of Kerala that was elected to power in 1957, Menon was second in rank and held the Finance portfolio. When the party split, he was made the Secretary of the state unit of the Communist Party of India. Achyutha Menon was chosen to lead the coalition Government that was formed in the state in 1969.

As a Chief Minister, Menon adopted a welfare approach rooted in the principles of socialism. Coopting the services of science and technology for the overall development of the people was also central to his approach. Achyutha Menon set up Kerala's first Science and Technology Department, and formulated a Science Policy Resolution. He also took the initiative to start a string of advanced research institutions that would help to take the fruits of science to the common people. These included the Centre for Development Studies(CDS), the Sri Chitra Tirumal Institute for Medical Science and Technology (SCTIMST), the Forest Research Institute (KFRI), the Centre for Water Resources Development and Management (CWRDM) and the Centre for Earth Science Studies (CESS).

Successful implementation of land reforms, which wiped out the vestiges of the old feudal order in the agrarian system was another significant

achievement of Achyutha Menon as Chief Minister. His other noteworthy achievements were the nationalization of forest lands, the implementation of the Laksham Veedu programme (a housing scheme of massive scale for the homeless), the improvement of the working conditions of both industrial and farm labourers and the strengthening of the Public Distribution System.

Achyutha Menon was a humanist whose universal vision often made him look beyond party interests. Though his faith in Communism was firm, he sought to place the communist vision in a broad perspective. He often expressed admiration for Gandhism for its positive aspects like the emphasis it placed on truthfulness, moral values and ahimsa. Achyutha Menon's intellectual pursuits were not confined to the domain of politics. He has a few short stories and plays to his credit. However, his essays and pen sketches were a greater contribution to literature wherein the sincerity of his prose, together with his uncomplicated style made him a widely read writer.

He led an active intellectual life even after he stepped down from the position of Chief Minister in 1977 to lead a retired life. As a human being, he concerned himself with all that was happening around him. He raised his voice whenever he felt that justice and human dignity were being threatened, often chiding politicians in power and trying to reassure the common man. For more than half a century, he enriched the social, political and cultural life of Kerala with his presence.

The Department of Posts is privileged to issue a commemorative stamp on this remarkable leader who left behind the example of a distinguished and fruitful life for others to emulate.

Credits:-

Text : P.N. Ranjit Kumar
Stamp/FDC : Gulistaan
Cancellation : Nenu Gupta

भारतीय डाक विभाग
Department of Posts
India



सी. अच्युत मेनोन
C. ACHYUTHA MENON

सी. अच्युत मेनोन

सी. अच्युत मेनोन (1913-1991) को केरल के मुख्यमंत्री के रूप में उनके द्वारा किए गए उत्कृष्ट विकास कार्यों के लिए याद किया जाता है जिससे न केवल राज्य की अर्थव्यवस्था में बदलाव आया बल्कि समाज में एक नई बौद्धिक चेतना का भी संचार हुआ।

उनका जन्म एक निम्न-मध्यवर्गीय परिवार में हुआ था तथा उनका प्रारंभिक जीवन केरल के एक छोटे शहर त्रिश्शूर में व्यतीत हुआ जो अपनी सांस्कृतिक परम्पराओं के लिए प्रसिद्ध है। यद्यपि युवा अच्युत मेनोन त्रिश्शूर में अपने वकालत के पेशे में कार्यरत थे तथापि आह्वान पर जल्दी ही राष्ट्रीय आंदोलन में कूद पड़े। प्रारंभ में उन्होंने कांग्रेस के लिए कार्य किया परन्तु 1942 में वे कम्युनिस्ट पार्टी में शामिल हो गए जो उनके विचारों से अधिक मेल खाती थी।

केरल के प्रथम कम्युनिस्ट मंत्रालय में, जिसे 1957 में सत्तासीन किया गया था, मेनोन दूसरे नम्बर के नेता थे तथा उन्होंने वित्त विभाग सँभाला। जब पार्टी का विभाजन हुआ, उन्हें भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी की राज्य इकाई का सचिव बनाया गया। अच्युत मेनोन को राज्य में 1969 में बनी संयुक्त सरकार का नेतृत्व करने के लिए चुना गया।

मुख्यमंत्री के रूप में मेनोन ने समाजवादी विचारधारा के सिद्धांतों में निहित कल्याणकारी दृष्टिकोण को अपनाया। लोगों के समग्र विकास के लिए विज्ञान और प्रौद्योगिकी भी उनके दृष्टिकोण का मुख्य आधार थे। अच्युत मेनोन ने केरल के प्रथम विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग की स्थापना की तथा एक विज्ञान नीति प्रस्ताव तैयार किया। विज्ञान के लाभों को आम जन तक सुलभ बनाने के लिए उन्होंने अनेक उन्नत अनुसंधान संस्थाओं के लिए भी पहल की। इनमें विकास अध्ययन केन्द्र (सीडीएस), श्री चित्र तिरुमल चिकित्सा विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान (एससीटीआईएमएसटी), वन अनुसंधान संस्थान (केएफआरआई), जल संसाधन विकास एवं प्रबंधन केन्द्र (सीडब्ल्यूआरडीएम) तथा पृथ्वी विज्ञान अध्ययन केन्द्र (सीईएसएस) शामिल हैं।

भूमि सुधारों का सफल कार्यान्वयन, जिसने कृषि व्यवस्था में पुरातन सामंती व्यवस्था के अवशेषों को समाप्त किया, मुख्यमंत्री के रूप में अच्युत मेनोन की अन्य महत्वपूर्ण उपलब्धि थी। वन भूमि

का राष्ट्रीयकरण, लक्ष्म बीडु कार्यक्रम (बेघरों के लिए विशाल आवास योजना), औद्योगिक एवं कृषि श्रमिकों की कार्य स्थितियों में सुधार तथा सार्वजनिक वितरण प्रणाली का सुदृढीकरण उनकी अन्य उल्लेखनीय उपलब्धियाँ हैं।

अच्युत मेनोन एक मानववादी थे जिनकी वैश्विक दृष्टि अक्सर उन्हें पार्टी के हितों से ऊपर उठाती थी। यद्यपि साम्यवाद में उनकी अटूट आस्था थी तथापि वे साम्यवादी दृष्टि को एक व्यापक परिप्रेक्ष्य में देखते थे। वे सत्य, नैतिक मूल्यों और अहिंसा जैसे अपने सकारात्मक पहलुओं के लिए गांधीवाद की अक्सर प्रशंसा करते थे। अच्युत मेनोन के बौद्धिक कार्यकलाप मात्र राजनीति के क्षेत्र तक ही सीमित नहीं थे। उन्हें कुछ लघु कथाएँ और नाटक लिखने का श्रेय भी जाता है। तथापि निबंधों और शब्दचित्रों के कारण साहित्य में भी उनका बड़ा योगदान है। बेबाक गद्य शैली और अभिव्यक्ति की स्पष्टता ने उन्हें एक लोकप्रिय लेखक के रूप में स्थापित कर दिया था।

वर्ष 1977 में मुख्यमंत्री का पद छोड़ने के पश्चात भी वे अपने सेवानिवृत्त जीवन में बौद्धिक रूप से सक्रिय रहे। एक मनुष्य के रूप में वे सदैव सजगता से अपने आस-पास के घटनाक्रम से जुड़े रहे। जब भी उन्होंने यह महसूस किया कि न्याय और मानव प्रतिष्ठा पर आंच आ रही है तो उन्होंने अपनी आवाज उठाई तथा सत्तासीन राजनीतिज्ञों को फटकार लगाते हुए आम जन का मनोबल बढ़ाया। आधी शदी से भी अधिक समय तक वे केरल के सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक जीवन को अपनी मौजूदगी से समृद्ध करते रहे।

डाक विभाग इस उल्लेखनीय नेता, जिन्होंने दूसरों के लिए एक गरिमामय और उद्देश्यपूर्ण जीवन का उदाहरण प्रस्तुत किया है, पर स्मारक डाक टिकट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है।

आभार :-

विषय वस्तु	: पी.एन. रंजीत कुमार
डाक-टिकट/ प्रथम दिवस आवरण	: गुलिस्तां
विरूपण	: नीनू गुप्ता



तकनीकी आंकड़े TECHNICAL DATA

जारी करने की तारीख Date of Issue	: 13 जनवरी, 2013 : 13 January, 2013
मूल्यवर्ग Denomination	: 500 पैसा : 500 p
मुद्रित डाक-टिकटें Stamps Printed	: 3.1 लाख : 0.31 Million
मुद्रण प्रक्रिया Printing Process	: वेट ऑफसेट : Wet Offset
मुद्रक Printer	: भारत प्रतिभूति मुद्रणालय नाशिक : India Security Press, Nashik

© डाक विभाग, भारत सरकार। डाक-टिकट, प्रथम दिवस आवरण सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास है।

© Department of Posts, Government of India. All rights respect to the stamp, first day cover and information brochure with the Department.